आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2542 • उदयपुर, शुक्रवार 10 दिसम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

सूर्य चलने लगा अकेला

जन्म से ही बाएं पैर की अपेक्षा छोटा था दायां पैर, संस्थान ने लगाया मॉड्यूलर एक्सटेंशन प्रोस्थेसिस

नरेश साहू के घर 6 साल पहले दूसरे बेटे ने जन्म लिया। परिवार को खुशी के साथ साथ दुःख भी हुआ। नवजात बालक का दांया पैर बांए पैर की अपेक्षा लगभग 7 इंच छोटा होने के साथ ही घुटने में किसी प्रकार का जोड़ नहीं था। यह स्थिति आगे जाकर इसके लिए बड़ी मुश्किल बनने वाली थी। दुर्ग (छत्तीसगढ़) जिले की पथरिया तहसील के भेड़ेसरा गांव में रहने वाले गरीब किसान नरेश साहू ने अपने इस बेटे को 2–3 साल की उम्र होने पर रामपुर के एम्स सहित अन्य शहरों के अस्पतालों में दिखाया लेकिन कोई स्थाई उपाय नहीं मिला।

सूर्यकांत नामक इस बच्चे को पड़ोस के ही एक स्कूल में दाखिल करवाया गया। बच्चा पांव छोटे–बड़े होने के कारण चल नहीं पाता था। उसे गोद में अथवा साइकिल पर स्कूल छोडना पड़ता था। किसी ने कैलिपर तो किसी ने कृत्रिम पांव लगवाने की सलाह दी लेकिन गरीबी के चलते यह व्यवस्था नहीं हो सकी। तभी परिवार के किसी मित्र ने उन्हें उदयपुर के नारायण सेवा संस्थान ले जाने की यह कहते हुए सलाह दी कि वहां निःशुल्क कृत्रिम पांव, कैलिपर अथवा उपचार जो भी सम्भव होगा वह संतोषजनक ढंग से हो जाएगा।

पिता नरेश साहू बच्चे को लेकर 19 सितम्बर को संस्थान में आए जहां डॉ. अंकित चौहान ने उसके पांव की स्थिति को देखते हुए इसका विकल्प विशेष कैलिपर को ही मानते हुए बच्चे को कैलिपर विभाग के हेड डॉ. मानस रंजन साहू के पास भेजा। जिन्होंने सूर्यकांत के लिए अत्याधुनिक मॉड्यूलर एक्सटेंशन प्रोस्थेसिस सहित विशेष डिजाइन का कैलिपर तैयार कर लगाया। जो बाएं पैर के बराबर ही था।

बच्चे की उम्र बढने के साथ उसके वजन को झेलने और उसे चलने में यह एक्सटेंशन प्रोस्थेसिस बड़ी मदद करेगा। कुछ दिन सहारे के साथ चलने के बाद नरेश अब खुद चलता है। पिता ने बताया कि वह अकेला ही स्कूल जाता और लौटता है। संस्थान ने उनके परिवार की चिंता को तो दूर किया ही बालक को भी आत्मविश्वास से भर

टीना थामेगी अब कलम

भोपाल (मध्यप्रदेश) के सूखी सेवनिया कस्बे को अब अन्य बच्चों की तरह अपने हाथ में भी पकड़ सकेगी कलम और लिखेगी अपने सुखद भविष्य की इबारत। इस बालिका के जन्म से ही दांए हाथ का पंजा (हथेली) विकसित नही हुई थी। सिर्फ कलाई पर नन्हीं–नन्हीं उंगलियां थी। माता–पिता व बबलू कुशवाह बच्ची की इस जन्मजात कमी से काफी दुःखी थे। जनवरी 2021 में भोपाल में संस्थान की ओर से .त्रिम अंग(हाथ–पैर) माप शिविर भोपाल उत्सव समिति के तत्वावधान में आयोजित हुआ। जिसमें माता–पिता टीना को लेकर गए जहां उसके लिए कोहनी तक .त्रिम हाथ बनाने का माप लिया गया। 6 माह बाद 25 जून 2021 को यह हाथ टीना को लगा दिया गया।

हाथ लगाने के साथ ही संस्थान में उसकी माता को इस बात का प्रशिक्षण भी दिया गया कि हाथ का संचालन और रख–रखाव किस प्रकार होगा। टीना और माता–पिता अब बेहद खुश हैं। टीना कहती है कि अब वह खुशी–खुशी स्कूल जाएगी और खूब लिख–पढ़ कर जिंदगी के लम्बे सफर को सुखद बनाएगी।

अंधेरे से उबरा संदीप

पुत्र के जन्म पर परिवार और सगे–संबंधियों में खुशी की लहर थी। लेकिन यह खुशी तब दुःख में तब्दील हो गई, जब पता चला कि बच्चा जन्म से ही पोलियो का शिकार है। इसके दोनों पांव कमजोर, टेढ़े और घुटनों के पास सटे हुए थे। आस–पास के अस्पतालों में भी दिखाया और उपचार भी हुआ लेकिन कोई लाभ न मिला। किसी बड़े अस्पताल में जाना गरीबी के कारण संभव भी नहीं था। यह त्रासदायी दास्तान है बिहार के पश्चिमी चमपारण जिले के गांव मगरोहा में रहने वाले पिता सुनील कुमार की। बालक संदीप जन्मजात दिव्यांगता के दुःख को लेकर उम्र के सोपान चढ़ता हुआ चौदह बरस का हो गया। माता–पिता ने गोदी में उठाकर उसे दूसरी कक्षा तक पढ़ाई कराई लेकिन बच्चे के आगे का भविष्य गरीबी और दिव्यांगता के कारण उन्हें अंधेरे में ही दिखाई देता था।

माता–पिता दिहाड़ी मजदूर हैं और बच्चे–बच्चियों सहित पांच सदस्यों के परिवार का पोषण करते है। एक दिन उन्हें किसी रिश्तेदार ने सलाह दी की वे बच्चे को राजस्थान के उदयपुर शहर स्थित नारायण सेवा संस्थान में लेकर जाए, जहां इस तरह की बीमारी के निःशुल्क ऑपरेशन होते हैं। उसने इन्हें ये भी बताया कि वह खुद भी इस बीमारी का शिकार था। वहां जाने के बाद अब चलता हूं और अपने दैनन्दिन काम भी बिना सहारे आसानी से कर लेता हूं। सुनील बताते हैं कि वे बच्चे को लेकर 2018 में संस्थान में आए जहां डॉ. अंकित चौहान ने उनकी जांच कर बच्चे के पांव का पहला ऑपरेशन किया। इसके बाद 15 सितम्बर, 2021 के बीच कुल 4 ऑपरेशन हुए। संदीप अब पहले से ज्यादा खुश रहता है और चलता भी है। माता–पिता अपने सिर का बोझ हल्का करने के लिए संस्थान का बारम्बार आभार जताते हैं।

एक नया रास्ता

सर्दी का मौसम था। एक सज्जन सुबह 5 बजे उठे, और घूमने निकल पड़े। उन्हें सड़क के किनारे एक आदमी पड़ा दिखा। पास गये तो देखा उसके पास कपड़े भी पूरे न थे। सोचा, शायद ठण्ड से बेहोश हो गया है ! उसके दुबले–पतले शरीर से तथा खाली पेट से लगता था, शायद एक दो दिन से बेचारे ने कुछ खाया भी न होगा।

उन्होंने कुर्त्ते की जेब में हाथ डाला पर उसमें एक पैसा भी न था। यहां तक कि रुमाल भी जेब में न था। वह उस बेहोश आदमी के हाथ–पांव, सिर पर अपना हाथ फैरते हुए बोले– भाई, धीरज रखना, मैं घर जाकर वापस अभी आता हूँ तुम्हारे लिए कुछ लेकर। अभी मेरे पास कुछ भी नहीं है। उनके हाथ फेरने से उसे कुछ होश आया, बोला– आपके हाथों की गर्मी मुझें मिली– यह क्या कम है ? थोड़ी देर में सूरज की गर्मी से मैं थोड़ा और अच्छा हो जाऊंगा। उसके इस जवाब से घूमने निकले उस व्यक्ति को प्रकाश की एक नई किरण मिली। एक नया रास्ता। जो है– उसका सन्तोष और धैर्य से सामना करना चाहिए !

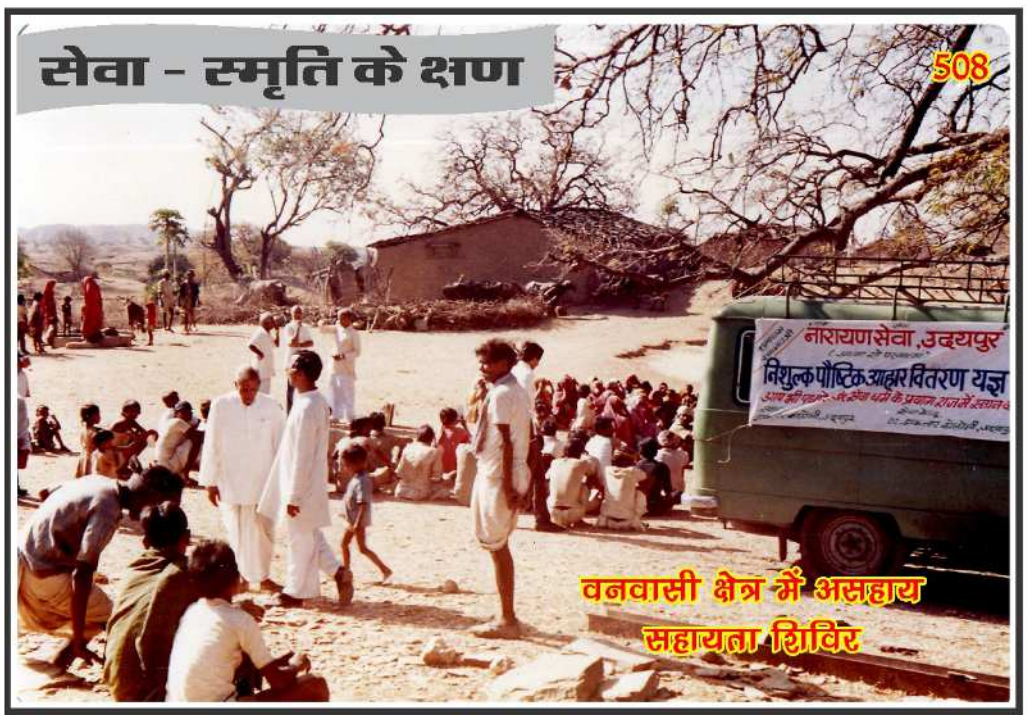

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

जमाना आज कैसा बदल गया ? किन्हीं से कोई यज्ञ कराते हैं, कोई कर्मकाण्ड कराते हैं पहले पूछते हैं– पण्डित साहब कुल मिलाके आपको कितना देना है ? कई महाराज! ऐसे बढ़िया होते हैं, बढ़िया एकदम विप्र बोलते– आप जो दोगे वो माथे पर चढ़ाकर ले लूंगा। आप जो दोगे। नारायण सेवा जब शुभारम्भ हुई उसके बाद 1993 में, जब बोम्बे में कुछ ऑपरेशन कराये। कुछ, कभी– कभी यज्ञ और कभी– कभी यज्ञ में विघ्न भी पैदा हो जाता है। तो एक विघ्न पैदा हो गया था। एक लोभी महानुभाव मिल गये थे। बाद में हमने परिवर्तन किया, और दूसरों के पास गये। बोले– आप जो दोगे वो ले लूंगा।

मैंने कहा– आप बता दीजिये, आप पहले हुकम कर दीजिये। आपका भी मन खुश रहेगा। और उन्होंने कहा– आप सवा रूपया भी दे दोगे ऑपरेशन का, तो मैं गर्दन झुका के ले लूंगा। एक मात्र भी मैं मन में नाराज नहीं रहूंगा।

हमने कहा– डॉक्टर साहब गले लगिये तो वशिष्ठ जी ने उतना ही लिया जितना उचित था। ऐसे ही अपने को भाइयों– बहनों लेना चाहिये। ये लालच बुरी बला है। ये लोभ पाप का बाप है। कोई लोभी हो जावे, और लोभ हो जावे तो बहुत मुष्किल होती है।

विश्वामित्र महाराज भी बड़े त्यागी थे। चक्रवर्ती सम्राट दशरथ जी ने उनको भी कहा– सब कुछ आप जो कहोगे वो हो जायेगा। उन्होंने भी अपना नेक लिया। प्रतिक मात्र लिया।

ये कहते हैं, दोनों तरफ से अच्छाई। सेवक चक्रवर्ती सम्राट दशरथ जी कह रहे है। ऐसा युग आज भी आना चाहिये। जहाँ चक्रवर्ती सम्राटों के सोने के स्वर्ण मुकुट सन्यासी, ऋषि–महर्षि ऐसे रिर्सच करने वाले, मानवता का कल्याण करने वालों के चरणों में झुके। विश्वामित्र जी भी पधार गये।

सम्पादकीय

कोरोना महामारी ने भारी संख्या में तबाही फैलायी है। इस दौरान अनेक लोग हमसे सदा–सदा के लिये बिछुड़ गये। बड़ी मात्रा में शारीरिक रूप से क्षति हुई है। वैज्ञानिकों, सरकारों, प्रशासनों, समाज–सेवियों, सकारात्मक विचारकों तथा अनंत लोगों की शुभकामनाओं के प्रभाव से वातावरण बदलने लगा है। तन और धन की क्षति भी खूब हुई है पर इसे पुनः अर्जित करना कठिन नहीं है। इस कालखंड में सर्वाधिक क्षति मन की हुई है। मन में कमजोरी के कारण भय, स्वार्थ व केवल स्वयं की चिंता का भाव ज्यादा प्रभावी हो गया है। मानव सभ्यता व भारतीय संस्कृति के पूर्व प्रमाण बताते हैं कि हमारी जड़ें परहित की भूमि में हैं। इसलिये परार्थ के भाव को भी पुनः सिंचित करना एक अनिवार्य कर्म है। हम सबको तन, धन के साथ मानव मन को भी सुदृढ़ करना है। हमारी सामाजिक संरचना, हमारा धार्मिक तानाबाना, हमारी ऊँची सोच इन सबके लिए उर्वरक है। इनका उपयोग कुछेक को नहीं, हरेक को करना है। देखेंगे कि दृश्य बदलते देर नहीं लगेगी।

कुछ काव्यमय

दिखने लगा है जल्द ही,
मानव त्रासद का अंत।
दुःख की बदली छंटते ही,
खुशियां फैलेंगी दिग्दिगंत।
बस थोड़ा संयम और,
कर ले रे मानव धारण।
सब मिल करें उपाय,
दूर हो रोग - प्रसारण।

- वरदीचन्द राव

बंधनों से मुक्ति

आषाढ़ माह की गरम दोपहर थी। भगवान बुद्ध अपने शिष्यों के साथ भ्रमण पर जा रहे थे। चारों तरफ बिखरी थी तो बस रेत ही रेत।

रेत पर चलने के कारण तथागत के पैरों के निशान बनते जा रहे थे। तभी वहां एक ज्योतिषी आए वो उसी रास्ते से अपने घर जा रहे थे।

उन्होंने रेत पर बुद्ध के पैरों के निशान देखे। वह उन्हें देख रहा था और उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। उसने अपने जीवन में ऐसे पदचिह्न नहीं देखे थे। ज्योतिषी ने सोचा शायद यह पदचिह्न किसी चक्रवर्ती सम्राट के हो सकते हैं।

लेकिन सामने जब उसने बुद्ध को देखा तो उसे यकीन नहीं हुआ क्योंकि यह पदचिह्न एक संन्यासी व्यक्ति के थे। बुद्ध के चेहरे पर एक चमकती कांति थी।

ज्योतिषी ने हाथ जोड़कर निवेदन किया कि आपके पैरों में जो पद्म है, वह अति दुर्लभ है। हमारी ज्योतिष विद्या कहती है कि आपको चक्रवर्ती सम्राट होना चाहिए, परंतु आप तो? भगवान बुद्ध हंसे और कहा, 'आपका यह ज्योतिष काम करता था। अब मैं सब बंधनों से मुक्त हो गया हूं।'

अपनों से अपनी बात

आसक्ति टूटे

व्यक्ति सात साल पहले जैसा था, अब वैसा नहीं है। शरीर की रचना की दृष्टि से सब कुछ बदल जाता है। अगर नहीं बदलता, तो वह है हमारा स्वभाव, संस्कार और आदतें। शरीर खुद बदल रहा है लेकिन मन को हमें बदलना पड़ता है। बिना ट्रेनिंग और अभ्यास के मन का बदलना या कुछ सीखना मुश्किल होता है। मन में चिंताओं का कूड़ा करकट और बुरे संस्कारों का गोबर भरा है, तब तक उपदेश के अमृत का लाभ नहीं होगा।

उपदेश का अमृत प्राप्त करना है तो इससे पूर्व मन को शुद्ध करना चाहिए। चिंताओं को दूर करना चाहिए। बुरे संस्कारों को नष्ट करना होगा, तभी ईश्वर का नाम वहाँ चमक सकता है और तभी सुख और आनंद की ज्योति जग सकती है। दूसरी बात गंगा स्नान करने से तीर्थ करने से भी मन की शुद्धि हो ये आवश्यक नहीं है।

एक वृतांत सुनाता हूँ तुम्हे मेरी बात समझने में आसानी होगी। महाभारत के बाद पांडवों ने आत्म–शुद्धि के लिए तीर्थयात्रा करने का निर्णय किया। वे

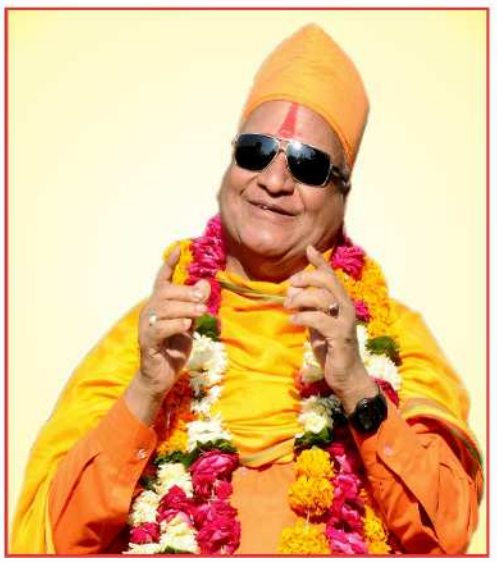

श्रीकृष्ण के पास विदा लेने के लिए गए।

कृष्ण ने विदा देते हुए उन्हें एक तुंबी सौंपी और कहा– तुम लोग जिन–जिन तीर्थों पर स्नान करो, उनमें इसको भी स्नान करवा देना।"

पांडव लंबी तीर्थ यात्रा कर वापस आए और उन्होंने तुंबी श्रीकृष्ण को सुपुर्द की। श्रीकृष्ण ने पांडवों के सामने ही तुंबी को काटकर उसका एक छोटा–सा टुकड़ा मुंह में डाला और एकदम कड़वाए मुंह की भाव–भंगिमा बनाते हुए उसे थूक दिया।

इसके साथ ही वे पांडवों से बोले– "ऐसा प्रतीत होता है कि तुम लोगों ने इस तुंबी को तीर्थो में स्नान नहीं करवाया है, अन्यथा इतने तीर्थो में डुबकियां लगाकर भी यह कड़वी कैसे रहती...?

पांडव बोले– "प्रभो! हमने इसे सभी तीर्थों में नहलाया है, पर नहलाने पर भी यह तो कड़वी ही रहेगी.. इसकी प्रवृत्ति में ही कडुआ पन है तो मीठी कैसे होगी...? ये सुनकर श्रीकृष्ण बोले– "फिर तीर्थो में नहाने से तुम लोगों की आत्मा शुद्ध कैसे होगी..?' नहाने–धोने से बाह्य शुद्धि तो हो सकती है, पर शरीर के अंदर भरी तरह–तरह की अशुचि समाप्त नहीं हो सकती। फिर एक बात और भी तो है, शरीर की प्रकृति की कुछ ऐसी है कि अच्छे–से–अच्छे भोजन का भी खून, वीर्य, मल, मूत्र, कफ आदि के रूप में परिणमन हो जाता है फिर ये ही पदार्थ अशुचि के रूप में जब शरीर के विभिन्न स्रोतों से बाहर आते हैं तो व्यक्ति उनसे घृणा करने लगता है।

शरीर की इस प्रकृति और स्थिति को यदि व्यक्ति सही रूप में पहचान ले तो शरीर के प्रति आसक्ति को टूटने में बहुत सुगमता होती है। शरीर का स्वरूप और प्रकृति जैसी है वैसी है।

–कैलाश 'मानव'

अधूरे सपने के बाद

जुलियो इगलेसियस का बचपन से एक ही सपना था –अपने पसंदीदा क्लब–रियल मेड्रिड की तरफ से फुटबॉल खेलना। वह दिन भर अभ्यास करते रहते थे। धीरे–धीरे करते वह एक अच्छे गोलकीपर बन गए।

20 वर्ष की उम्र तक आते–आते उनके बचपन का सपना साकार होने का समय धीरे–धीरे नजदीक आने लगा। एक दिन उन्हें रियल मैड्रिड खेलने के लिए अनुबंधित कर लिया गया। फुटबॉल के अनेक दिग्गज

जुलियो के खेल से प्रभावित थे। वे सभी यह मान कर चल रहे थे कि जुलियो शीघ्र ही स्पेन के पहले दर्जे के गोलकीपर बन जाएँगें।

1963 की एक शाम को हुई एक भयानक कार– दुर्घटना ने जुलियो की जिन्दगी को पूरी तरह बदल कर रख दिया। रियल मेड्रिड और स्पेन का नंबर वन गोलकीपर बनने वाला जुलियो, अस्पताल में पड़ा हुआ था। उसकी कमर से नीचे का हिस्सा पूरी तरह से लकवाग्रस्त हो चुका था।

चिकित्सक इस बात को लेकर भी पूरी तरह से आश्वस्त नहीं थे कि जुलियो फिर कभी चल पाएँगे या नहीं? फुटबॉल खेलना तो बहुत दूर की बात थी, वापस ठीक होना ही बहुत लंबा और दर्दनाक अनुभव था।

जुलियो इस घटना के बाद जीवन से निराश हो चुके थे। 18 महीनों तक बिस्तर पर रहने वाले जुलियो की ज़िन्दगी पुनः पटरी पर लौटने लगी, जब उन्हें नर्स के द्वारा गिटार भेंट किया गया। जुलियो ने गाने, कविताएँ लिखने के साथ गिटार बजाना और गाना सीखा। कार–दुर्घटना के 5 वर्ष बाद उन्होंने एक संगीत प्रतियोगिता में भाग लिया तथा 'Life goes on the same' गीत गाकर प्रथम पुरस्कार जीता। आज वह विश्व के एक महान गीतकार, संगीतकार, गायक और गिटार वादक हैं। कहने का तात्पर्य है कि यदि आपका कोई एक सपना पूरा नहीं हो पाया हो तो आपको निराश होने की आवश्यकता नहीं है, जीवन में आपके लिए अभी भी बहुत– कुछ बचा हुआ है। उसे हासिल करने के प्रयत्न कीजिए, क्योंकि Life goes on the same.....

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश को समझ नहीं आया कि यह गारबेज क्या होता है, उसने पूछा तो मनु भाई ने बताया कि कचरा पात्र। यह सुनकर कैलाश भी अपनी कड़ी मेहनत के ऐसा हश्र की कल्पना कर हंस पड़ा। दो दिन और निकल गये। न तो कहीं से कोई सम्पर्क सूत्र मिल रहा था न ही एक पैसे का भी जुगाड़। जया बेन के आग्रह पर वह अमेरिका आ तो गया था मगर इनका भी यहां कोई सम्पर्क वृत्त नहीं था।

इतने पैसे और समय बरबाद होने का बारम्बार ध्यान आता और वह रोने लगता। जया बेन से उसका रोना देखा नहीं गया। उसका मन पसीज गया, वह बोली–भैया आप रोते क्यूं हो। कैलाश बोला–बहन, मैं ऐसे किले में फंस गया हूँ जिसके चारों तरफ दीवार ही दीवार है, मैं दीवारें खटखटा रहा हूँ कि कहीं तो दरवाजा मिल जाये, मगर मिल नहीं रहा। मनु भाई भी कैलाश की बात सुन द्रवित हो गये। अब उनके मन में पछतावा होने लगा कि क्यूं उसने कैलाश को डाक को पत्रक भेजने से हतोत्साहित किया।

मनु भाई ने कैलाश को धैर्य रखने को कहा और सलाह दी कि चलों, अपने पोस्ट ऑफिस चल कर लिफाफे ले आते हैं, एक बार ये पत्रक भी डाक में डाल कर देख लेते हैं। कैलाश व मनु भाई डाकखाने से लिफाफे ले आये। पत्रकों पर जयाबेन की बहन के कनेक्टिकट स्थित घर का पता व फोन नं. लिख दिया। पत्रक लिफाफों में भर, पते लिख, डाक में डाल दिये।

अंश - 179

हम पलक क्यों झपकाते हैं ?

सामान्य रूप से पलक झपकाना एक अनैच्छिक क्रिया है, लेकिन इस क्रिया को हम इच्छानुसार भी कर सकते हैं। हम औसतन हर छः सेकंड में एक बार पलक झपकाते हैं। इसका अर्थ है कि हर व्यक्ति अपने जीवनकाल में लगभग 25 करोड़ बार पलक झपकाता है। क्या आप जानते हो कि पलक झपकने की क्रिया क्यों होती है ? पलक झपकने की क्रिया में हमारी पलकें आँखों की मांसपेशियों द्वारा ऊपर–नीचे गति करती रहती हैं। ऊपर की पलकों के नीचे छोटी–छोटी अश्रु ग्रंथियाँ होती हैं।

जैसे ही हम पलक बंद करते हैं, वैसे ही इन ग्रंथियों से एक नमकीन द्रव निकलता है। यही द्रव हमारी आँखों को गीला रखता है। जब यह द्रव अधिक मात्रा में निकलता है, तब आँसुओं का रूप धारण कर लेता है। इस प्रकार पलक झपकने की क्रिया द्वारा हमारी आँखें गीली रहती हैं और सूखती नहीं हैं। 24 घंटों में इनसे लगभग 0.75 बार से 1.1 ग्राम तक तरल पदार्थ निकलता है।

पलक झपकने से आँखों की रक्षा भी होती है। जब कोई धूल का कण या जलन पैदा करने वाला पदार्थ में चला जाता है, तब पलक झपकाने में निकलने वाला द्रव पदार्थ आँखों की सफाई का काम

करता है। पलक झपकने की क्रिया के दौरान धूल के कण या जलन पैदा करने वाले पदार्थ इसी द्रव के साथ बाहर आ जाते हैं। पलक झपकने से बहुत तेज प्रकाश भी हमारी आँखों में प्रवेश नहीं कर पाता। तेज रोशनी में हमारी पलकें स्वयं ही बंद होने लगती हैं, जिससे आँख के पर्दे पर अधिक प्रकाश नहीं पहुँच पाता।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

राजमल जी भाई साहब ने कहा था पानी क्यूं उबाल रहीं हो? बोली बच्चे दुःखी थे। बच्चे बार बार कह रहे थे। मां भूख लग रही है सोचा बच्चे देखते रहेंगे कुछ तो ढांढस बंधेगा। बहुत कुछ परिवर्तन आया है 1986 के 19 जनवरी के उस पानरवा में और 2020 के एक अप्रेल में बहुत परिवर्तन आया है। आना ही चाहिए मनरेगा योजना हो गई।

मजदूरों को मजदूरी मिलने लगी।

बहुत कुछ हुआ है। अन्न भी पहुँच रहा है 2 रुपए किलो मे मक्की भी मिल रही है। बहुत अच्छी बात है तीन चार रुपए में चावल भी मिल रहे हैं। गरीबों को राशन कार्ड पर गरीबों को ही मिलना चाहिए। अमीरों के पास तो बहुत कुछ है। बंगले बने हुए है।

इस कोरोना वायरस ने सबको बराबरी पर ला दिया। न मजहब देखता है न भूगोल देखता है। 600 से अधिक बीमारों का इलाज करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। करीबन 2100 से कम थोड़ा कम और 2000 से थोड़ा ज्यादा वस्त्र वितरण हुए पौष्टिक आहार वितरण हुआ। लाभान्वित हुए। छाछ केन्द्र चालू करेंगे ये दूध का पाऊडर लीजिए।

आओ मोटियार आपकी एक कमेटी बना देते हैं दूध के पाऊडर को गरम पानी में डालकर घुमाना फिर छानना फिर उसे गरम करके दही का जावण देना। दही बन जाएगा बहुत अच्छा फिर इसमें बिलोनी भी लाए है बांस की बिलोनी। छाछ केन्द्र प्रारम्भ हो गए। बच्चों के नाखून काटे जा रहे हैं। डॉ अग्रवाल साहब कह रहे है राम राम बोलो बच्चों राम राम बोलो।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 306 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से

संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पैन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023